MAHARAJA COLLEGE ,ARA

UG @ 2nd Year

भूषण : शिवाजी प्रशस्ति

इंद्र जिमि जंभ पर, बाड़व सुअंभ पर,
रावन सदंभ पर, रघुकुल राज है।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहसबाहु पर, राम द्विजराज है।
दावा द्रुम दंड पर, चीता मृग झुंड पर,
भूषण वितुंड पर, जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छ बंस पर, सेर सिवराज है।।

प्रसंग – प्रस्तुत घनाक्षरी में कविवर भूषण ने शिवाजी के प्रताप, बल और प्राकर्म का वर्णन किया है।

अर्थ – कविवर भूषण शिवाजी की वीरता और तत्कालीन मुस्लिम शासकों में उनके बहादुरी के आतंक की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार देवराज इंद्र ने जम्भासुर

MAHARAJA COLLEGE ,ARA

राक्षस के आतंक को नष्ट कर उसके ऊपर अपना आधिप्त्य जमा लिया, समुद्र की अगाध जल राशि पर जैसे बाड़वानल पलक झपकते अपने आगोश में ले लेता है, लंका के अधिपति अहंकारी रावण के साम्राज्य पर जैसे रघुकुल शिरोमणि भगवान राम ने कर नष्ट पराजीत कर दिया, आकाश में फैले काले–काले घने मेघ को जैसे पवन क्षण भर में ही छिन्न–भिन्न कर देता है, महादेव ने जिस प्रकार रति के पति कामदेव को पलक झपकते जला कर राख कर दिया, हजार भुजा वाले सहस्रबाहु नामक राक्षस को जिस तरह भगवान परशुराम ने परास्त किया, जंगल में वृक्षों की शाखाओं को जिस प्रकार दावाग्नि थोड़ी ही देर जला कर नष्ट कर देती है, मृग के झुंड को क्षण भर में जैसे चीता तितर–बितर कर देता है, विशाल शरीर वाले बलवान हाथियों पर जंगल के राजा शेर का जैसे आतंक रहता है, घोर अंधकार को जैसे सूर्य का तेज प्रकाश पल भर में नाश कर देता है, श्रीकृष्ण ने जिस प्रकार मामा कंस को मारकर उसके अत्याचार से से प्रजाजनों को मुक्त कराया और अपना अधिकार जमा लिया, ठीक उसी प्रकार मराठा सरदार शिवाजी ने तत्कालीन मुसलमान शासकों के वंश का नाश कर, उसके साम्राज्य पर अपना आधिपत्य जमा लिया है।